* Deffinitions of Economics
अर्थशास्त्र की परिभाषा

प्रारंभ में अर्थशास्त्र को Political economy कहा जाता था। इसे 'Political' शब्द का अर्थ राज्य के विषय में तथा 'Economy' शब्द का अर्थ साधनों की व्यवस्था करना। अतएव Political economy का अर्थ हुआ 'राज्य के साधनों की व्यवस्था करना' चूँकि इन साधनों को एक शब्द में धन कहा जाता है, अर्थात् अर्थशास्त्र धन का शास्त्र हुआ। अर्थशास्त्र की विषय-सामग्री एवं परिभाषा को लेकर अर्थशास्त्रीगण एकमत नहीं है। विभिन्न अर्थशास्त्रियों ने अर्थशास्त्र के अभिप्राय को भिन्न-भिन्न रूपों में परिभाषित किया है। अर्थशास्त्र की परिभाषाओं की विविधता को देखते हुए जे. एम. कीन्स ने यह मत व्यक्त किया है कि "राज्य अर्थव्यवस्था ने परिभाषाओं से अपना गला घोंट लिया है।" विभिन्न अर्थशास्त्रियों ने अर्थशास्त्र को निम्न वर्गों में विभाजित कर दिया —

(i) धन संबंधि विचारधारा — एडम स्मिथ, जे. बी. से., वाकर, सीनीयर
(ii) कल्याण ,, ,, — मार्शल, पीगू, केन्स.
(iii) वैज्ञानिक ,, — रौबिन्स, विकस्टीड
(iv) विकास ,, ,, — सैम्युलसन
(v) अन्य ,, — प्रो० जे० के० मेहता, बेन्हम, हेनरी

* धन संबंधि परिभाषा (wealth concept)

अर्थशास्त्र को 'धन का शास्त्र (science of wealth) कहकर पुकारा गया। इस विचारधारा के जनक एडम स्मिथ ने अर्थशास्त्र के क्रमबद्ध अध्ययन का प्रयास किया था, अतः उन्हें आधुनिक अर्थशास्त्र का जनक (Father of modern economics) कहा जाता है। सन 1776 ई० में इनकी प्रसिद्ध पुस्तक "An enquiry into the nature and causes of wealth of nations" प्रकाशित हुई। एडम स्मिथ के अनुसार, "अर्थशास्त्र राष्ट्रों की सम्पत्ति की प्रकृति तथा उसके कारणों की खोज से संबंधित विज्ञान है।" (Economics is a subject concerned with an essay into nature and causes of weath of nations.)"

In other words, "Economics is the science of wealth."

(P.T.O.)

प्रो॰ जे॰ बी॰ से॰ के अनुसार, " अर्थशास्त्र वह विज्ञान है जो धन या सम्पत्ति की विवेचना करता है।"

प्रो॰ वालकर के अनुसार, " अर्थशास्त्र ज्ञान की वह शाखा है जो धन से संबंधित है।"

* कल्याण संबंधि परिभाषाएँ (Definitions Related to welfare)

प्रो॰ मार्शल ने अपनी पुस्तक 'Principal of Economics' में एडम स्मिथ एवं उनके समकालीन अर्थशास्त्रियों की इस विचारधारा को बदल दिया कि धन व्यक्ति का साध्य है। मार्शल ने इस तथ्य पर बल दिया कि अर्थशास्त्र का अध्ययन विषय धनोपार्जन नहीं बल्कि मानव- कल्याण है। मार्शल के अनुसार, " धन साधन है साध्य नहीं।" इस प्रकार मार्शल एवं उसके समकालीन अर्थशास्त्रियों द्वारा अर्थशास्त्र के अध्ययन के इस चरण में धन के स्थान पर मानव - कल्याण के विचार की स्थापना की गई। प्रो॰ मार्शल के अनुसार, "

"अर्थशास्त्र एक ओर तो सम्पत्ति का अध्ययन है और दूसरी ओर जो कहीं अधिक महत्वपूर्ण है मानव के अध्ययन का एक अंग है।"

(Thus, it is on the one side, a study of wealth and on the other and more important side, a part of the study of man.)

In other words," science is a human welfare"

प्रो॰ पीगू के अनुसार, "अर्थशास्त्र आर्थिक कल्याण का अध्ययन है। आर्थिक कल्याण से हमारा अभिप्राय सामाजिक कल्याण के उस भाग से है जिसे मुद्रा से संबंधित किया जाता है।"

* मार्शल के द्वारा दी गई परिभाषा में निम्न महत्वपूर्ण तथ्य सामने आते हैं —

(i) मानव- कल्याण का अध्ययन धन से अधिक महत्वपूर्ण है।

(ii) अर्थशास्त्र का उद्देश्य मानव - कल्याण है जो कि भौतिक साधनों से प्राप्त होता है।

(iii) अर्थशास्त्र के अध्ययन क्षेत्र में सामाजिक एवं सामान्य मनुष्य की आर्थिक क्रियाओं को सम्मिलित किया जाता है।

Scanned with CamScanner

* **आलोचना :** → मार्शल एवं उनके अनुयायियों की परिभाषाओं की निम्नलिखित आलोचनाएँ की गयी है —

(1) अर्थशास्त्र के क्षेत्र को सीमित करना → अर्थशास्त्र में प्रो. मार्शल ने केवल भौतिक वस्तुओं पर ध्यान दिया है अभौतिक वस्तुओं की उपेक्षा की गई है। भौतिक एवं अभौतिक वस्तुओं के बीच की सीमा को वास्तविक जीवन में स्पष्टत: अंकित नहीं किया जा सकता। भौतिक एवं अभौतिक वस्तुएँ परस्पर इस तरह से जुड़ी रहती हैं कि उनको एक - दूसरे से अलग करना असंभव नहीं तो कठिन जरूर है। जैसे → डॉक्टर, वकील, अध्यापक आदि की सेवाएँ भी जो मात्रा में सीमित होती हैं और मनुष्य के कल्याण में वृद्धि करती हैं।

(2) मार्शल की परिभाषा वर्गकारणी है विश्लेषणात्मक नहीं → मार्शल ने मनुष्य की क्रियाओं को आर्थिक और गैर आर्थिक दो भागों में बाँटा है तथा बताया है कि अर्थशास्त्र में केवल आर्थिक क्रियाओं का अध्ययन किया जाता है। आर्थिक क्रियाएँ वे हैं जिन्हें मुद्रा के मापदण्ड से मापा जाता है। इसके विपरीत गैर आर्थिक क्रियाएँ वे हैं जो मुद्रारूपी मापदण्डों से मापे नहीं जा सकते।

(3.) मार्शल की परिभाषा भौतिकता के भ्रम में फँसी है → मार्शल ने अर्थशास्त्र का संबंध भौतिक कल्याण से स्थापित किया है न कि अभौतिक कल्याण से। लेकिन व्यवहार में भौतिक अभौतिक में अन्तर नहीं किया जा सकता। क्योंकि अर्थशास्त्र के अध्ययन में दोनों ही शामिल हैं, दोनों से मनुष्य को उपयोगिता मिलती है।

(4.) अर्थशास्त्र का कल्याण से कोई संबंध नहीं → अर्थशास्त्र का कल्याण से कोई संबंध नहीं है। रॉबिन्स के अनुसार सभी आर्थिक क्रियाएँ सदा मानव कल्याण में वृद्धि नहीं करती जैसे → शराब बनाने एवं बेचने की क्रिया आर्थिक तो है परन्तु कल्याणकारी नहीं।

(5.) अर्थशास्त्र उद्देश्यों के बीच तटस्थ रहता है — अर्थशास्त्र को विशुद्ध सामाजिक विज्ञान बनाना भी ठीक नहीं है। यदि कल्याणवादी परिभाषा को स्वीकार भी कर लिया जाता है, तो अर्थशास्त्र मानव का सामाजिक प्राणी में अध्ययन करेगा। यह उन व्यक्तियों का अध्ययन करेगा जो समाज में विचरण करते हैं उनका अध्ययन नहीं करेगा जो समाज से बाहर रहते हैं।

इस प्रकार मार्शल की परिभाषा की आलोचना की गई किन्तु इतना तो निश्चित ही कहा जा सकता है कि मार्शल ने अर्थशास्त्र को एक नया मोड़ दिया।

— o —

Scanned with CamScanner